गेहूँ

गेहूँ हमारे राज्य की एक प्रमुख रबी फसल है। इसकी खेती हमारे यहाँ करीब 22 लाख हेक्टेयर में की जाती है। वैसे तो हमारे यहाँ की मृदा एवं जलवायु गेहूँ उत्पादन हेतु काफी उपयुक्त है, लेकिन धान की कटाई देर से सम्पन्न होने के कारण गेहूँ की बुआई में देरी होने से इसकी उपज में कमी आ जाती है। हमारे यहाँ गेहूँ की खेती विभिन्न परिस्थितियों में जैसे–असिंचित अवस्था में बुआई, सिंचित अवस्था में समय से बुआई, सिंचित अवस्था में विलम्ब से बुआई, जीरो टीलेज एवं सतही बुआई द्वारा की जाती है। भागलपुर जिले में गेहूँ की खेती बड़े क्षेत्रफल में की जाती है।

मृदा का चुनाव : गेहूँ की खेती विभिन्न प्रकार की मृदाओं में की जा सकती है, परन्तु दोमट मृदा इसकी खेती के लिये सर्वोतम होती है। रेतीली मृदा जिसमें पानी रोकने की क्षमता एवं कार्बनिक जीवांश की मात्रा कम हो, इसकी खेती के लिये अच्छी नहीं होती है। ऊसर भूमि में गेहूँ की खेती सिंचित अवस्था में केवल अनुशंसित किस्मों का ही प्रयोग कर संभव है। अच्छी उपज के लिये भूमि अम्लीय या क्षारीय नहीं होना चाहिए।

खेत की तैयारी : खेत की जुताई कम से कम तीन से चार बार करनी चाहिए। पहली जुताई मिट्टी पलटने वाली हल से और बाद में डिस्क हैरो या देशी हल से खेत की जुताई करनी चाहिए। हर जुताई के बाद पाटा देने से मिट्टी मुलायम एवं भुर–भुरी तथा भूमि में नमी का संरक्षण अधिक होता है जो बीज के अच्छे अंकुरण के लिये आवश्यक है।

गेहूँ की बुआई के लिये सर्वोतम तापमान 21 से 25 डिग्री सेन्टीग्रेड होता है। ऐसा उपयुक्त तापक्रम बिहार में 15 से 20 नवम्बर के बाद ही आता है। नवम्बर माह में जब दो–तीन दिन लगातार मुंह से भाप आने लगे तो गेहूँ की बुआई के लिए उपयुक्त समय माना गया है।

बीजोपचार : बुआई के पूर्व बीज की अंकुरण क्षमता की जाँच अवश्य कर लेनी चाहिए। बीज यदि उपचारित नहीं है तो बुआई से पूर्व बीज को फफूंदनाशक दवा वीटावैक्स या वैविस्टीन 2 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से अवश्य उपचारित कर लेना चाहिए।

उर्वरक

परिस्थिति	उर्वरक की मात्रा एन. पी. के./हे	प्रयोग विधि
सिंचित (समय पर बुआई)	150 : 60 : 40	नत्रजन की आधी तथा स्फूर और पोटाश की पूरी मात्रा अर्थात 130 कि.ग्रा. डी0ए0पी0, 112 कि.ग्रा. यूरिया एवं 67 कि.ग्रा. म्यूरेट ऑफ पोटाश अंतिम जुताई के पहले खेत में अच्छी तरह से मिला दें । नत्रजन की बची मात्रा अर्थात 139 कि.ग्रा. यूरिया को दो बराबर भागों में प्रथम एवं द्वितीय सिंचाई के बाद उपरिवेशित करें ।
सिंचित (विलम्ब से बुआई)	120 : 40 : 20	नत्रजन की आधी मात्रा और स्फूर एवं पोटाश की पूरी मात्रा अर्थात 87 कि. ग्रा. डी0ए0पी0, 96 कि.ग्रा. यूरिया एवं 33 कि.ग्रा. म्यूरेट ऑफ पोटाश अंतिम जुताई के समय दें तथा नत्रजन की शेष बची मात्रा अर्थात 130 कि.ग्रा. यूरिया प्रथम सिंचाई के समय उपरिवेशित करें ।
असिंचित	60 : 30 : 20	नत्रजन, स्फूर और पोटाश की पूरी मात्रा अर्थात् 66 कि.ग्रा. डी0ए0पी0, 106 कि.ग्रा. यूरिया तथा 33 कि.ग्रा. म्यूरेट ऑफ पोटाश अंतिम जुताई के समय खेत में छींट दें। वर्षा होने पर खड़ी फसल में 20 कि.ग्रा नत्रजन अर्थात 45 कि.ग्रा. यूरिया प्रति हेक्टर की दर से उपरिवेशन करें।

सिंचाई एवं जल प्रबंधन : गेहूँ की अच्छी पैदावार के लिये आवश्यक है कि समय पर फसल की सिंचाई की जाय। आमतौर पर हमारे यहाँ 3–4 सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है। गेहूँ में हमेशा हल्की सिंचाई करनी चाहिए ताकि खेत में 6–8 घंटों बाद पानी दिखाई न पड़े । अन्यथा अधिक जलजमाव से पौधे पीले पड़ जायेंगें तथा उसमें श्वसन की क्रिया अस्थायी रूप से रूक जायेगी।

निकाई–गुड़ाई एवं खरपतवार प्रबन्धन : गेहूँ की फसल में खरपतवार के कारण उपज में 10 से 40 प्रतिशत तक की कमी हो जाती है । अतः खरपतवारों का नियंत्रण नितांत आवश्यक है। गेहूँ की बुआई के 25–30 दिनों बाद अथवा प्रथम सिंचाई के पश्चात् हैण्ड हो द्वारा निकाई कर घास पात निकालने से उपज पर अच्छा प्रभाव देखा गया है । इसके अलावा रसायनों द्वारा खरपतवार नियंत्रण की अवस्था में खेत में पर्याप्त नमी का होना काफी महत्वपूर्ण होता है तथा रसायनों का प्रयोग आर्थिक दृष्टि से अपेक्षाकृत कम खर्चीला है।

कटाई–दौनी : फसल पकने पर सुबह के समय ही कटाई करना चाहिए तथा कटाई के उपरांत जल्द ही दौनी कर बीज को अलग कर लेना चाहिए।

भंडारण : भंडार में रखने से पूर्व बीज को अच्छी तरह धूप में सुखा लें तथा बीज हेतु रखी जाने वाली किस्मों को दवा से उपचारित कर भण्डारण करना चाहिए।